अध्याय – 9

मेरा नया बचपन : सुभद्राकुमारी चौहान

जन्म – 1904 ई.
देहावसान– 1948 ई.

अपने समय की लोकप्रिय कवयित्री सुभद्राकुमारी चौहान का जन्म प्रयाग में हुआ था तथा उनकी आरम्भिक शिक्षा भी वहीं हुई। साहित्य के प्रति उनकी रुचि बचपन से ही थी तथा 5 वर्ष की आयु में उन्होंने पहली कविता लिखी थी। उन्होंने भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन में सक्रिय भागीदारी की तथा कई बार जेल भी गयीं। वे साहित्य और राजनीति में समान रूप से सफल रहीं।

मूलतः वे कवयित्री थीं तथा उनकी कविताओं में दो प्रवृत्तियाँ प्रमुख रूप से देखने को मिलती हैं–प्रथम राष्ट्रीय भावना की तो द्वितीय घरेलू जीवन की। उनकी राष्ट्रीय भावनाओं से युक्त कविताओं पर समसामयिक घटनाओं, राष्ट्रप्रेम तथा संस्कृति की गहरी छाप मिलती है। उनमें काव्य प्रतिभा नैसर्गिक थी इसलिए उनकी काव्य शैली की प्रमुख विशेषता यह है कि वे जटिल–से–जटिल विषय को सहज और सरल शब्दों में व्यक्त कर देती हैं। भाव और अभिव्यक्ति का इतना गहरा तादात्म्य बहुत कम रचनाकारों में मिलता है। इसलिए कोई भी भाव उनकी कविता में आरोपित नहीं लगता। बुन्देलखण्ड में गाये जाने वाले लोकगीत के छंद में 'झाँसी की रानी' जैसी ओजस्वी कविता उनकी प्रतिभा और दृष्टि दोनों की परिचायक है। इसीलिए अंग्रेज सरकार ने इस कविता को जब्त कर लिया था, पर यह लोगों को कंठस्थ थी। इस कविता की सरल किन्तु ओज भरी पंक्तियों ने हिन्दी भाषा–भाषी जनता को खूब प्रेरित किया था।

सुभद्राकुमारी चौहान ने कहानी और निबन्ध विधाओं में भी लिखा। 'बिखरे मोती' तथा 'उन्मादिनी' उनकी कहानियों के संकलन हैं। उनकी कहानियों में उदात्त आदर्शवाद को अभिव्यक्ति मिली है। सुभ्रदाकुमारी चौहान को उनकी कहानियों पर दो बार 'सेम्सरिया पुरस्कार' (हिन्दी साहित्य सम्मेलन की ओर से) मिला। उनके निबन्ध भी समसामयिक समस्याओं पर केन्द्रित हैं।

उनकी पहचान एक सजग कवयित्री के रूप में है जिसने राष्ट्रीय चेतना तथा हृदय की कोमल भावनाओं को सहजता से अभिव्यक्ति दी। शिल्प के लिए कोई विशेष आग्रह उनकी रचनाओं में नहीं मिलता।

'मेरा नया बचपन' कविता में जीवन की बाल्यावस्था को जिस सादगी और भाव प्रवणता के साथ सुभद्राकुमारी चौहान ने ढाला, वह उनकी विशिष्ट उपलब्धि है। बचपन को लेकर लिखी यह कविता अपनी तरह की दुर्लभ कविता है।

बचपन जीवन का सबसे सुन्दर समय होता है। जहाँ किसी प्रकार का तनाव नहीं होता। अपनी बेटी के साथ लेखिका का खोया हुआ बचपन पुनः लौट आता है।

मेरा नया बचपन

बार–बार आती है मुझको मधुर याद बचपन तेरी।
गया ले गया तू जीवन की सबसे मस्त खुशी मेरी।।
चिंता रहित खेलना–खाना वह फिरना निर्भय स्वच्छंद।
कैसे भूला जा सकता है, बचपन का अतुलित आनंद।।
ऊँच–नीच का ज्ञान नहीं था, छूआ–छूत किसने जानी।
बनी हुई थी वहाँ झोंपड़ी और चीथड़ों में रानी।।
किए दूध के कुल्ले मैंने चूस अँगूठा सुधा पिया।
किलकारी किल्लोल मचा कर सूना घर आबाद किया।।
रोना और मचल जाना भी क्या आनंद दिलाते थे।
बड़े–बड़े मोती से आँसू जयमाला पहनाते थे।।
मैं रोई, माँ काम छोड़कर आई, मुझको उठा लिया।
झाड़–पोंछ कर चूम–चूम कर गीले गालों को सुखा दिया।।
दादा ने चंदा दिखलाया नैन नीर–युत दमक उठे।
धुली हुई मुस्कान देखकर सबके चेहरे चमक उठे।।
वह सुख का साम्राज्य छोड़कर मैं मतवाली बड़ी हुई।
लुटी हुई, कुछ ठगी हुई–सी दौड़ द्वार पर खड़ी हुई।।
लाज भरी आँखें थीं मेरी, मन में उमंग रंगीली थी।
तान रसीली थी कानों में, मैं चंचल छैल छबीली थी।।
दिल में एक चुभन–सी थी, यह दुनिया अलबेली थी।
मन में एक पहेली थी मैं सबके बीच अकेली थी।।
मिला, खोजती थी जिसको हे बचपन! ठगा दिया तूने।
अरे जवानी के फँदे में मुझको फँसा दिया तूने।।
माना, मैंने, युवा काल का जीवन खूब निराला है।
आकांक्षा, पुरुषार्थ, ज्ञान का उदय मोहने वाला है।।
किंतु यह झंझट है भारी, युद्ध क्षेत्र संसार बना।
चिंता के चक्कर में पड़कर जीवन भी है भार बना।।
आजा बचपन एक बार फिर दे दे अपनी निर्मल शांति।
व्याकुल व्यथा मिटाने वाली यह अपनी प्राकृत विश्रांति।।
वह भोली सी मधुर सरलता, वह प्यारा जीवन निष्पाप।
क्या आकर फिर मिटा सकेगा तू मेरे मन का संताप।।

मैं बचपन को बुला रही थी बोल उठी बिटिया मेरी।
नंदन वन–सी फूल उठी वह छोटी–सी कुटिया मेरी।।
माँ ओ! कहकर बुला रही थी मिट्टी खाकर आई थी।
कुछ मुँह में कुछ लिए हाथ में मुझे खिलाने आई थी।।
पुलक रहे थे अंग, दृगों में कौतूहल था छलक रहा।
मुँह पर थी अह्लाद लालिमा, विजय गर्व था झलक रहा।
मैंने पूछा, यह क्या लायी?बोल उठी, ''माँ काओ।''
हुआ प्रफुल्लित हृदय खुशी से, मैंने कहा, ''तुम खाओ!''
पाया मैंने बचपन फिर से बचपन बेटी बन आया।।
उसकी मंजु मूर्ति देखकर मुझमें नवजीवन आया।
मैं भी उसके साथ खेलती–खाती हूँ, तुतलाती हूँ।।
मिलकर उसके साथ स्वयं मैं भी बच्ची बन जाती हूँ।
जिसे खोजती थी बरसों से अब जाकर उसको पाया।।
भाग गया था मुझे छोड़कर वह बचपन फिर से आया।

शब्दार्थ –

बचपन – बाल्यावस्था | निर्भय – भयरहित | सुधा – अमृत
स्वच्छंद – बिना रोक टोक के | निराला – अनोखा | उमंग – उत्साह
आकांक्षा – इच्छा, अभिलाषा | पुरुषार्थ – प्रयोजन | निर्मल – स्वच्छ
अतुलित – जिसकी तुलना नहीं की जा सके

वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. कवयित्री को बार–बार क्या याद आती है?

(अ) युवाकाल का जीवन (ब) बचपन की मधुर याद
(स) जीवन खूब निराला है (द) मन का संताप

2. बचपन में कवयित्री के रोने पर काम छोड़कर कौन आयी?

(अ) कवयित्री की सहेली (ब) कवयित्री की माँ
(स) कवयित्री की दादी (द) कवयित्री की बहन

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. कवयित्री को बचपन में आँसू के मोती आज कैसे लगते है?
2. कवयित्री की बिटिया कवयित्री को क्या खिलाना चाह रही है?

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. 'किलकारी किल्लोल मचा कर सूना घर आबाद किया' पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए।
2. 'नैन नीर–युत दमक उठे' पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए।

निबन्धात्मक प्रश्न –

1. 'मेरा नया बचपन' कविता का सारांश लिखिए।
2. जीवन में बचपन की क्या–क्या विशेषताएँ ऐसी है, जो हमें आज भी याद आती ह?

व्याख्यात्मक प्रश्न –

1. 'ऊँच–नीच का ज्ञान नहीं ..... सूना घर आबाद किया।' प्रस्तुत पद की व्याख्या कीजिए।
2. 'हुआ प्रफुल्लित हृदय ..... फिर से आया।' पद की व्याख्या कीजिए।